जयपुर रग्स फाउण्डेशन

वंचितों को बेहतरी की ओर ले जाने वाली मिसाल

एक बहुत ही प्रचलित कहावत है कि – जब भगवान एक रास्ता बंद कर देता है, तो दूसरा रास्ता भी खुद ही खोल देता है। आज की दुनिया में जहां गरीबी और बेरोजगारी ने भयानकता का रूप लेना शुरू कर दिया है, वहीं मजबूर लोगों को ऐसी मुश्किलों व सामाजिक बुराईयों से बाहर निकालने के लिए कई स्वयंसेवी संस्थाएं काम कर रही है।

अपनी उल्लेखनीय और प्रभावशाली कार्यप्रणाली से बेरोजगार व ग्रामीण क्षेत्र के गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों को, सशक्तिकरण के रास्ते पर लाने वाली, जयपुर रग्स फाउण्डेशन, असंख्य लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला चुकी है।

जयपुर स्थित, जयपुर रग्स फाउण्डेशन, कालीन बुनाई का प्रशिक्षण, पुराने हस्तशिल्प कर्मियों के अलावा नए लोगों को भी प्रदान करती है। इस कार्य को सीखने के बाद कारीगरों को निरंतर कमाई का स्त्रोत मिल जाता है। इस दिशा में जरफा ने अब तक कई महत्वपूर्ण मील के पत्थर पार किए हैं। विशेषकर, गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली महिलाएँ जो बुनाई प्रशिक्षण प्राप्त कर आत्मनिर्भर व आर्थिक रूप से सशक्त हुई हैं। इस प्रकार से संस्था की मदद से वह अपने मौलिक अधिकारों से भी रूबरू होती है।

एक उन्नत जीवन के साथ जरफा संस्था अब तक 40,000 से ज्यादा हस्थशिल्पियों के जीवन को बदलने में सफल रही है। इसके अलावा भारत के 10 प्रदेशों में अपने अनूठे कालीन निर्माण प्रक्रिया को स्थापित कर

- ▲ गैर–उपजाऊ क्षेत्रों में रोजगार का साधन उपलब्ध करवाना,
- ▲ बुनकरों को अधिक व वाजिब भुगतान दरों पर काम देना,
- ▲ कालीन उद्योग से बालश्रम का उन्मूलन

जैसे महत्वपूर्ण पड़ाव हासिल किए हैं।

कई वर्षों तक कारीगर व कम्पनी के बीच मध्यस्थता करवाने वाले और कारीगरों को काम दिलवाने वाले बिचौलिए या दलाल उनका शोषण करते रहे। ऐसे शोषकों से छुटकारा दिलाकर, जरफा नें कारीगरों को उनके कार्य के सही दाम दिलाने में अपना सार्थक सहयोग देकर एक बहुत बड़ा जीवन परिवर्तन का कदम उठाया। जयपुर रग्स फाउण्डेशन के संस्थापक श्री नंद किशोर चौधरी, एक अत्यंत विनम्र व यथार्थवादी मनुष्य हैं, जिन्होंने कारीगरों के जीवन को बहुत ही करीब से देखा और जिया है। कालीन निर्माण में अपने जीवन के 30 साल से ज्यादा समय बिताने वाले श्री चौधरी ने सिर्फ दो लूम और नौ कारीगरों के साथ अपने कालीन व्यवसाय की शुरूआत की थी। आज जयपुर रग्स भारत के सबसे बड़े कालीन निर्यातकों में से एक हैं। उसी के साथ कुछ वर्षों के बाद, उन्होंने बुनकरों की आवाज को हक दिलाने के लिए 2004 में जरफा की स्थापना की। श्री चौधरी ने शुरूआत से यह माना है कि गरीब बुनकरों की संख्या में तभी गिरावट दर्ज की जा सकती है, जब तक उनको बुनाई के क्षेत्र में नए मापदण्डों व बुनाई–कला के बारे में प्रशिक्षित न किया जाए। साथ ही उनको उनके कार्य के पूरे पैसों के साथ उनके बनाए हुए कालीनों की प्रसिद्धि वैश्विक खरीदारों तक पहुंचे। इस प्रकार कारीगरों व वैश्विक ग्राहकों के बीच की खाई को पाटा जा सकता है। श्री चौधरी के इसी विश्वास व जरफा के आदर्शों से सहमति जताते हुए प्रसिद्ध प्रबंधन विचारक स्व. प्रोफेसर सी.के. प्रहलाद ने अपनी किताब The Fortune The Bottom of the Pyramid में भी जयपुर रग्स के इस अनोखे मॉडल का उल्लेख किया है। उन्होंने अपनी किताब में गरीब बुनकरों को वैश्विक ग्राहकों से सीधा जोड़ने के क्रॉंतिकारी विचार की वकालत की है। यही जरफा का गरीबी दूर करने का मॉडल है। जयपुर रग्स फाउण्डेशन अपने कौशल प्रशिक्षण सत्रों व गरीबी दूर करने के मॉडल के द्वारा अगले 5 साल के समय में 1,00,000 कारीगरों को सीधा लाभ पहुँचाने की योजना रखता है। साथ ही उन 1,00,000 कारीगरोंके 3,00,000 परिवार–जन परोक्ष रूप से लाभांवित होंगे।